आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 मई 2014

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,115
युगाब्द-5115, अंक-83-71, वर्ष-7,
वैशाख कृष्ण पक्ष, मई -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि : 5-6 मई, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्रः 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः।। -ऋ० १। २। ७। १

व्याख्यान–हे (देवाः) विद्वानो! (विष्णुः) सर्वत्र व्यापक परमेश्वर ने सब जीवों को पाप तथा पुण्य का फल भोगने और सब पदार्थों के स्थित होने के लिए, (पृथिव्याः) पृथिवी से लेके (सप्त) सप्तविधि (धामभिः) धाम, अर्थात् ऊँचे-नीचे सात प्रकार के लोकों को बनाया तथा गायत्र्यादि सात छन्दों से विस्तृत विद्यायुक्त वेद को भी बनाया, उन लोकों के साथ वर्त्तमान व्यापक ईश्वर ने (यतः) जिस सामर्थ्य से हम लोगों को रचा है, (अतः) -सामर्थात्- उस सामर्थ्य से हम लोगों की रक्षा करे। हे विद्वानो! तुम लोग भी उसी विष्णु के उपदेश से (नः अवन्तु) हमारी रक्षा करो। कैसा है वह विष्णु? जिसने इस सब जगत् को (विचक्रमे) विविध प्रकार से रचा है, उसकी नित्य भक्ति करो।।

सम्पादकीय

भाषा का अवमूल्यन.....?

मानव जीवन को परमपिता परमात्मा ने जो उपहार दिये हैं, उनमें से भाषा अर्थात् वाणी ऐसा महत्वपूर्ण है, जिसके लिए हम ईश्वर के कितने ही कृतज्ञ हों, तो भी न्यून ही है। थोड़े समय के लिए ही सही, कभी हमने कल्पना की है? या अनुभव करके देखा है कि-हमारे पास भाषा न हो, तो क्या होगा? एक बार देखिए तो सही चाहे दस मिनट ही क्यों न हो, अनुभव तो कीजिए, आपको कैसा अनुभव होता है? इससे एक तो प्रभु के इस उपहार का महत्व समझ में आयेगा, दूसरा हमारी जो इच्छाएं है, वे व्यक्त नहीं हो पायेंगी, और व्यक्त न हुई तो पूर्ण होने की सम्भावना समाप्त हो जायेगी। तब क्या होगा? कैसा जीवन होगा? हमारी परिस्थिति क्या होगी?

क्या हम नेता बन पायेंगे? क्या हम प्रवचनकार, उपदेशक, गायक, न्यायधीश, अधिवक्ता (वकील), अध्यापक, प्रवक्ता, पत्रकार (रिर्पाटर), विश्लेषक, प्रवाचक (कमेंटेटर) आदि-आदि बन पायेंगे? उत्तर है नहीं। और हम देख रहे हैं, हमारे देश में ही नहीं, अपितु सारे संसार में चाहे लोकतन्त्र हो चाहे राजतन्त्र, उसके नेता बोलने से ही जाने-जाते हैं, कितना ही कार्यकुशल नेता क्यों न हो, यदि बोलने में सक्षम नहीं है तो दुनियाभर में उसका महत्व नहीं रहता, तभी तो हमारी केन्द्र सरकार को स्पष्टीकरण देना पड़ रहा है कि-"हमारे वर्त्तमान प्रधानमंत्री जी ने अपने कार्यकाल में हजारों भाषण दिये हैं।" इसके पीछे कारण विरोधियों के आक्रमण हैं, कि-हमारे प्रधानमंत्री तो बोलते ही नहीं, मौन रहते हैं। इसी प्रकार प्रवचनकार, उपदेशक, गायक, न्यायधीश, अधिवक्ता, अध्यापक, पत्रकार, विशलेषक, प्रवाचक आदि के प्रति श्रद्धा, भाव, भावना और वर्त्तमानकाल की भाषा में कहें तो सारी की सारी मार्केटिंग भाषा-भाषण पर निर्भर होती है, इसी से उनके चाहने वाले अनुयायी (फैन्स) लाखों-करोड़ों में होते हैं। और इसीलिए परमपिता परमात्मा की वेदोक्त आज्ञा है-**"वाचं वदत भद्रया"**, **"मधुमतीं वाचं वदत"** **"वाचा वदामि मधुमत्"**। स्मृतिकार कहते हैं-**"सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्"**, अतिथि सत्कार के सन्दर्भ में **"वाक् चतुर्थी च सूनृता"** और वेदांगों में छः में से तीन वेदांग-शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त का मुख्य विषय ही भाषा की साधुता, अर्थात् शुद्धता है। साहित्कारों ने भी समृद्ध और यथायोग्य भाव की अभिव्यक्ति हेतु भाषा को अभिधा, लक्षणा, व्यंजनादि प्रकारों में बांटकर, अलंकारों (उपमादि) और रसों (श्रृंगार, हास्यादि) से मनोरंजक बनाकर अत्यन्त समृद्ध किया है।

किन्तु दुर्भाग्य ही कहेंगे, कि-हमारे समाज और राष्ट्र के खेवनहार नेता समृद्ध भाषा की महान परम्परा के होते हुए भी भाव-भावना को व्यक्त करने के लिए अत्यन्त निम्नस्तर की भाषा का प्रयोग करते हुए गाली-गलौच पर उतर पड़े हैं। नेता शब्द का अर्थ होता है, नीयते इति जो व्यक्ति को , समाज को और राष्ट्र को उन्नति, समृद्धि, उत्थान की ओर ले चलने वाला हो, सत्य और धर्म (कर्तव्य) के पथ पर बढ़ाने वाला हो, भौतिक सम्पदा ही नहीं, अपितु समृद्धिशाली विचारों से भी जन-जन को ओत-प्रोत कर सके। और विचारों से ओत-प्रोम करने का माध्यम तो भाषा ही है, और उस भाषा में ही जब दरिद्रता अर्थात् शब्दों का अभाव दिखाई दे, वह भी नेताओं के द्वारा, तब समाज क्या करेगा? क्या पक्ष वाले सभ्य भाषा में विपक्ष का खण्डन नहीं कर सकते?

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

क्या विपक्ष वाले शिष्ट भाषा में सरकार को दिन में तारे नहीं दिखा सकते? खूनी हाथ, खूनी पंजा, मौत के सौदागर, शैतान, नपुंसक, पाकिस्तान चले जाओ, समुद्र में डूब मरो, हनीमून जैसे जुमले प्रयोग करके राष्ट्र को कौन-कौन नेता किस-किस दिशा में ले जाना चाहते हैं? इस मास की सोलहवीं अंग्रेजी तिथि तक यह सब और न जाने किन अपशब्दों का प्रयोग करेंगे?

आर्यों! आर्याओं! ऐसे समय में हम सभी को एक और उत्तरदायित्व को अपने कन्धों पर लेना होगा, कि-हम भाषा से दरिद्र न हों, अपितु अत्यन्त समृद्ध बनें, अपने लोगों को समृद्ध बनायें, जो हमारे आर्यगण सामाजिक पत्रकारिता (सोशल मीडिया) का प्रयोग करते हैं, फेसबुक, टिवटर, वाट्स-एप आदि पर अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं, किसी पुराणी, कुरानी, किरानी, कम्युनिष्ट या वेद विरोधी, समाज-राष्ट्र विरोधी राजनैतिक विचाराधारा का, मत-पन्थवादियों का खण्डन करते हैं, तो अवश्य कीजिए, कठारेतम शब्दों में कीजिए किन्तु दरिद्रभाषा (गाली) में कभी न कीजिए, क्योंकि यह भी एक व्यसन की तरह है, एक बार आदत पड़ जाय तो जीवनभर पीछा नहीं छूटता और जाने-अनजाने मुख से निकल ही जाता है। साहित्यकार और विचारशील लोग कहते हैं कि-तलवार का भी घाव भर जाता है, किन्तु शब्दों का घाव नहीं भरता। अतः भद्रवाणी, भद्रभाषा को ही जीवन का आधार बनाना चाहिए। वेदाज्ञा को शिरोधार्य करना ही चाहिए।

मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उस को मानना, मनवाना और जो असत्य है उस को छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्यधर्म से बहिः है।

-ऋषि दयानन्द
(सत्यार्थ प्रकाश)

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	आर्यसमाज गांव-दुल्हेड़ा, झज्जर, हरियाणा	05-06 अप्रैल
2.	रा. वरिष्ठ विद्यालय, गांव-चन्दाना, कैथल, हरि.	05-06 अप्रैल
3.	गुरुकुल चितौड़ाझाल मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश	12-13 अप्रैल
4.	आर्यसमाज घिटोरनी, दिल्ली	12-13 अप्रैल
5.	आर्यसमाज, सैक्टर-11, पानीपत हरियाणा	19-20 अप्रैल
6.	आर्यसमाज, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	19-20 अप्रैल
7.	सार्वजनिक प्रा. चिकित्सालय, महेन्द्रगढ़, हरि.	26-27 अप्रैल
8.	आर्यसमाज, अमूल डेयरी, आनन्द गुजरात	26-27 अप्रैल
9.	धर्मशाला तहसील पहाड़ी, भरतपुर, राजस्थान	26-27 अप्रैल
10.	मोती देवी आर्यसमाज, नजफगढ़, दिल्ली	26-27 अप्रैल
11.	अग्रवाल धर्मशाला, सैक्टर-37, फरीदाबाद, हरि.	26-27 अप्रैल
12.	पंजन हेड़ी, ज्वालापुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड	26-27 अप्रैल

आर्या प्रशिक्षण सत्र

1.	आर्यसमाज गांव-सुंडाना, रोहतक, हरियाणा	22-23 अप्रैल

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	पट्टीदार धर्मशाला, गुरड़िया वर्मा, तह.जावर, जि-सिहोर, मध्य प्रदेश	10-11 मई	आर्य आशीष	8720850615
2.	आर्य कन्या उच्च विद्यालय, भिवानी, हरियाणा	10-11 मई	आचार्य महेश	9813377510
3.	नालन्दा शिक्षा निकेतन वरिष्ठ विद्यालय, भिवानी खेड़ा कुरूक्षेत्र हरि.	10-11 मई	आर्य देवीलाल	9813117794
4.	आर्य सत्यकाम निवास, सागरपुर, दिल्ली	10-11 मई	आर्य सत्यकाम एडवोकेट	9810679083
5.	आर्य कन्या पाठशाला, मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश	24-25 मई	आर्य अमित	9410242400
6.	सपना इन्टरनेशनल स्कूल, हापुड़, मोदीनगर, उत्तर प्रदेश	24-25 मई	आर्य विनोद	9997757844
	आर्या प्रशिक्षण सत्र			
1.	आर्य समाज दहल, जिला-भिवानी, हरियाणा	10-11 मई	आचार्य महेश	9813377510
2.	गुरुकुल चितौड़ाझाल, मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश	31मई-01जून	आर्य नरेन्द्र	9719940999

वैशाख मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(16 अप्रैल 2014 से 14 मई 2014)
प्रातः कालः 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

संध्या काल

ज्येष्ठ मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(15 मई 2014 से 13 जून 2014)
प्रातः कालः 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

– आचार्य सतीश

एक छोटी-सी जीवन यात्रा में इतने महानता के कार्य कर जाना और कालरूपी रेत पर अपने पद-चिन्ह छोड़ जाना न तो सामान्य बुद्धि के बस की बात है और न ही सामान्य पुरुषार्थ से संभव है। 26 वर्ष से भी कम आयु जिसकी रही हो वह अपने जीवन को इतनी ऊँचाईयों तक पहुँचा दे और वह भी तब जबकि जीवन के पिछले कुछ समय में रोग के कारण संभवत: पूर्ण सार्मथ्य न लगा पाए हों। परन्तु यह भी तो हो सकता है कि अत्यधिक पुरुषार्थ और सामर्थ्य के लगने के कारण मृत्यु और निकट आ गई हो और रोग की तीक्ष्णता बढ़ गई हो। लगता तो ऐसा ही है और उस महामानव के कार्यों में दिखावा तो नाम का भी न था। उनकी प्रत्येक बात स्वाभाविक थी, जिससे यही लगता है कि उनकी महत्ता वास्तविक, यथार्थ व ईश्वरीय देन थी। अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भ में ही उन्हें इंग्लैण्ड तक के वे विद्वान् जान गए थे जो अपने-आप को पूर्वीय विद्याओं का पण्डित कहते थे। उनकी प्रतिभा इतनी प्रखर थी कि विद्या की शायद ही कोई ऐसी शाखा होगी जिसकी और गुरुदत्त विद्यार्थी ने ध्यान न दिया हो-संस्कृत, अरबी, पदार्थ विज्ञान, भूगर्भ विद्या, रसायन शास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, शरीर शास्त्र, नक्षत्र विद्या, गणित, तत्वज्ञान, भाषातत्व शास्त्र-इन सब में और कई औरों में भी वे अच्छे ज्ञानकार ज्ञात होते थे और जो लोग उनके पास शंका समाधान के लिए जाते थे, उनके पण्डित्य को देखकर चकित रह जाते थे।

उनका जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुलतान में हुआ। उनके पिता लाला रामकृष्ण पंजाब के शिक्षा विभाग में एक प्रतिष्ठित अध्यापक थे। उनकी बुद्धि बड़ी तीव्र और स्मृति बड़ी दृढ़ थी। बड़ी आयु में संस्कृत का अध्ययन आरम्भ करने पर भी उन्होंने उस पर अधिकार प्राप्त कर लिया था। गुरुदत्त विद्यार्थी की माताजी स्वभाव से ही धार्मिक और उदार थी। गुरुदत्त को भी माता-पिता के संस्कार (गुण) विरासत में मिले थे। उनमें संकल्प की दृढ़ता, दृष्टि की तीक्ष्णता और बुद्धि की सूक्ष्मता पिता से तथा धैर्य व संयम माता से प्राप्त हुआ। पांच वर्ष की आयु से पहले उनके पिता ने उनकी शिक्षा घर पर ही प्रारम्भ कर दी थी और आठ वर्ष की आयु में झंग स्कूल में भर्ती हो गए, जहाँ उनके पिता अध्यापक थे। असाधारण तीव्र बुद्धि रखने के कारण वे अपनी श्रेणी के अच्छे लड़कों में से थे और परीक्षा में सदा उच्च स्थान पर रहते थे। मुलतान में कोई ऐसा पुस्तकालय न था जिस में वे ज्ञान वृद्धि के लिए न गए हों। अपनी कक्षा के विषयों के अतिरिक्त अनेक पुस्तकें पढ़ते थे जो विभिन्न गूढ़ विषयों से सम्बन्ध रखती थी। वे ज्ञान के बड़े जिज्ञासु थे और हाई स्कूल के दिनों में अंग्रेज विद्वानों के ग्रन्थों के पाठ और मनन से उनके पुराने विश्वास हिल गए। उन्होंने देखा कि जो फारसी ग्रंथों के पाठ उन्होंने पढ़े थे और जिन हिन्दू विचारों के अन्दर उनका पालन पोषण हुआ था, वे बहुत ज्यादा कल्पनात्मक और अयुक्त हैं। वे संशयात्मन् हो गए, यहाँ तक कि परमात्मा के अस्तित्व में भी संदेह करने लगे। ऐसे समय में जबकि पाश्चात्य सभ्यता की लहर प्रत्येक पदार्थ को बहाती हुई ले जा रही थी, जब फलत: लोग बड़ी संख्या में ईसाई मत को ग्रहण कर रहे थे और जब जनता के अन्दर भारी अशान्ति फैल रही थी, एक शक्तिशाली सुधारक का आगमन हुआ। उसके प्रादुर्भाव ने इस क्रम को पलट कर रख दिया। मुसलमान, ईसाई और हिन्दू जो भी उसके साथ शास्त्रार्थ करने और उसके बतलाए हुए धर्म की वृद्धि को रोकने के लिए आगे आए, उनमें से प्रत्येक को हार मानकर भागना पड़ा। जिस धर्म का वह जनता को उपदेश देता था वह बड़ा ही पवित्र, उच्च और आत्मा को उत्साह देने वाला था, उस में असत्य लेशमात्र भी न था। ज्यों ही इस धर्म के आदर्श और सच्चाईयां लोगों के सामने रखी गई तो लोगों ने उन्हें उत्सुकता के साथ ग्रहण कर लिया और वह सुधारक थे स्वामी दयानन्द। गुरुदत्त भी वैदिक धर्म की और आकृष्ट हुए और उन की जिज्ञासु क्षमताएं वहां तृप्त हो गई। वे 20 जून 1880 को आर्य समाज में प्रविष्ट हुए।

गुरुदत्त ने नवम्बर 1880 में एन्ट्रैस पास कर लिया और जनवरी 1881 में गर्वमेन्ट कॉलेज लाहौर में पढ़ने के लिए चले गए। कॉलेज में भर्ती के होने के थोड़े ही समय पाश्चताप उन्होंने कई महत्वपूर्ण और गूढ़ विषयों पर लेख लिखे जो उनके भाव की धीरता, विचारों की निर्दोषता और तत्वज्ञान की जटिल संस्थाओं पर अधिकार को दर्शाती है, ऐसे गुणों का पाया जाना सामान्य बात नहीं हैं। वे मई 1883 में एफ.ए.की परीक्षा में बैठे, उनके सहपाठी लाला लाजपतराय के अनुसार उन्होंने गुरुदत्त को घर पर कभी कॉलेज की पुस्तकें पढ़ते नहीं देखा था, फिर भी वे परीक्षा में प्रथम रहे। 1885 में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की और 1886 में एम.ए. की परीक्षा पदार्थ-विज्ञान में उत्तीर्ण की और गर्वमेन्ट कॉलेज लाहौर में साईन्स के सहायक प्रोफेसर नियुक्त हुए। 1887 में मिस्टर ओमन के छुट्टी पर चले जाने पर वे साइन्स के प्रोफेसर के तौर पर काम करने लगे। इस प्रकार गुरुदत्त ने आधुनिक विद्या में भी ऊँचे आयाम छुए।

प्रतिभाशाली होने के कारण गुरुदत्त ज्ञान सागर में गहरा गोता लगाया करते थे और सभी उपर्युक्त सुअवसरों ने उनकी बुद्धि और चरित्र पर बड़ा उत्कर्षकारी प्रभाव डाला। उनकी बुद्धि जगदीश्वर के अस्त्वि में विश्वास नहीं करती थी, यद्यपि उनकी आध्यात्मिक प्रकृति और नैतिक गुण, जो उच्च और श्रेष्ठ थे, जगत्पिता के अस्तित्व की प्रबल साक्षी देते थे। उनका हृदय परमात्मा और उसके उपकार और दया में दृढ़ विश्वास रखता था, लेकिन उनकी बुद्धि हृदय की आज्ञाओं को स्वीकार नहीं करती थी। इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिसने उनके जीवन की गति को बिल्कुल बदल दिया। स्वामी दयानन्द मृत्यु शैय्या पर पड़े थे और लाहौर आर्य समाज से लाला जीवनदास और पण्डित गुरुदत्त अजमेर पहुँचे। इसी से उनके जीवन ने पलटा खाया और आर्य समाज के इतिहास में एक भारी युग का आरम्भ हुआ। ऋषि दयानन्द उस असाधारण कष्ट में भी उफ तक नहीं कर रहे थे और पूर्णरूप से शान्तचित्त थे। कष्ट और परिताप का वहां चिन्ह मात्र भी न था। पण्डित गुरुदत्त जैसे तीव्र बुद्धि और शीघ्रग्राहक मनुष्य के लिए वस्तुत: यह एक विस्मयोत्पादक दृश्य था। इस समय उन्होंने अपने जीवन-काल में पहली बार आदर्श संस्कारक को देखा था। भयंकर शारीरिक पीड़ा होते हुए भी किस प्रकार एक आत्मा, परमात्मा से मिलने को उत्सुक और उल्लसित थी। स्वामी जी की मृत्यु के कुछ क्षणों पहले उन्होंने गुरुदत्त को छोड़कर सबको कक्ष से बाहर कर दिया। पण्डित गुरुदत्त यह सब देखते रहे। तब उनके अन्दर परिवर्तन पैदा हुआ। उनके मन में नास्तिकता का अन्तिम अवशेष नष्ट हो गया। उनकी सारी प्रकृति रूपान्तरित होकर एक उच्चतर वस्तु बन गई। उनके सभी संशय दूर हो गए और एक नवीन मनुष्य बन गए। उन्होंने देखा कि सत्य के लिए जीवन जीने वालों को मृत्यु से कोई डर नहीं लगता। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को अनेकों बार पढ़ा और कहा कि हर बार मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ न कुछ नवीन भोजन मिलता है।

उन्नीस वर्ष का यह युवक जब अजमेर से वापस लाहौर पहुँचता है तो जीवन के लक्ष्य को निर्धारित कर चुका होता है। लाहौर में आने के पश्चात् 8 नवम्बर 1883 ई. को जनता के सामने दयानन्द की स्मृति में एक कॉलेज की स्थापना का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कॉलेज के लिए धन एकत्रित करने के लिए अथक प्रयास किया। उनके व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली होते थे, वे हृदय की गहराई से बोलते थे और लोग कॉलेज के लिए धन देने को तैयार हो जाते थे। इसके

शेष पृष्ठ ६ पर

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	14 मई	दिन-बुधवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-स्वाती
अमावस्या	28 मइ	दिन-बुधवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-कृतिका
पूर्णिमा	13 जून	दिन-शुक्रवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-ज्येष्ठा
अमावस्या	27 जून	दिन-शुक्रवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-आर्द्रा

देश की उन्नति का उपाय

–आचार्या सुमनवती, भिवानी

आज देश के प्रत्येक भाग में यही ध्वनि गूंज रही है कि देश की उन्नति करो, जिससे ज्ञात होता है कि देश उन्नत अवस्था में नहीं है। जब यह ज्ञात हो गया कि देश को अवनति का रोग लगा हुआ है तो कौन मूर्ख होगा जो इसकी औषधि न करना चाहे। परन्तु जब हम वैद्यक शास्त्र के सिद्धान्तों पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते है कि चिकित्सा से पूर्व यह पता लगाना आवश्यक है कि यह रोग साध्य है अथवा असाध्य। दूसरा निर्बलता भी दो प्रकार की होती है–जैसे एक बालक निर्बल है और दूसरा एक रोगी व्यक्ति है, वह भी अतिनिर्बल है। अब विचार यह करना है कि जिस साधन से निर्बल बालक सबल बन सकता है उन्हीं साधनों से वह रोगी व्यक्ति सबल बन सकता है, स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है? कदापि नहीं। क्योंकि निर्बल बालक के लिए केवल पौष्टिक भोजन की आवश्कता है जबकि रोगी व्यक्ति को प्रथम तो औषधि की ही आवश्यक होगी। इसके पश्चात् उसे खाद्य वस्तु की भी आवश्यकता होगी। जो दूध–घी बालक के लिए अति हितकर है जिससे वह शीघ्र ही बलवान बन सकता है वही दूध–घी उस रोगी व्यक्ति के लिए जानलेवा सिद्ध हो सकता है। इससे स्पष्ट विदित है कि उन्नति के साधन अवस्था भेद से भिन्न–भिन्न होते हैं। यदि सबके लिए एक ही उपाय रखा जाए तो वह बहुत हानिकारक होगा। रोग की अवस्था को देखकर चिकित्सा करनी चाहिए। जो सबको एक ही औषधि का सेवन करने की सलाह देते हैं वे महामूर्ख हैं।

अब हम विचार करेंगे कि हमारा देश रोगी है या बालक के समान निर्बल? यदि बालक के समान निर्बल, कमजोर है तो उसे पुष्टिकारक भोजन देकर सबल बनाया जाए और यदि रोग के कारण निर्बलता को प्राप्त हो गया है तो रोग और उसके कारण को जानकर उसके निवारण के लिए औषधि का विचार किया जाए। इस बात को ध्यान में रखकर हम इस देश की नाड़ी को देखकर विचार करेंगे कि इसमें क्या–क्या दोष हैं इस देश की नाड़ी को देखने से हमें पता चलता है कि सर्वप्रथम तो देश धर्म–कर्म से शून्य है। इसमें न तो बड़ों का सम्मान है, न छोटों पर दया है, न बराबर वालों से प्रेम है, न ईश्वर की उपासना है, न ही दुराचारियों की उपेक्षा है। इस समय इस देश में धार्मिक तथा आचार–व्यवहार सम्बन्धी शक्ति का नाम भी नहीं है। दूसरी और धैर्य और सत्य की परीक्षा करते हैं तो मानते हैं कि एक रुपये की वस्तु बेचने वाला भी बिना झूठ के काम नहीं करता। यदि वह सत्य बोलता है तो भी उसका विश्वास कोई नहीं करता। यदि हम बिना मोल–तोल किए कुछ लेना चाहें तो असम्भव है। गाड़ी, ऑटो वाले से पूछो तो कहेगा कि बीस रुपये लूंगा, परन्तु ठहर जाएगा दस रुपये में। वकील से पूछो–क्या फीस लोगे तो कहेगा पन्द्रह हजार और मान जाएगा दस हजार में। झूठे गवाहों की तो पूछो मत जिस दाम के चाहिए ले लो। समाचार पत्रों के सम्पादकों के पास जाएं तो पता चलेगा कि ये झूठ के ठेकेदार हैं। इनको पैसा दे दो, झूठे और निकृष्ट व्यक्ति की प्रशंसा के भी ऐसे पुल बांध देगें कि प्राचीन समय के भाटों को भी मात कर दे। बाजार में चले जाएं तो दलालों की दुकान, डॉक्टरों के पास चले जाएं तो वहां भी सत्य का नाम नहीं। देश में झूठ के डंके बजते हैं, सत्य के दर्शन दुर्लभ हैं। यदि भारत के मुख मण्डल पर दृष्टिपात करते हैं तो एक अनोखी छटा है। देश के लोग भूख से तड़प रहे हैं। विदेशों को निर्यात कम है, विदेशी वस्तुएं खरीदकर देश के धन को बाहर भेजा जा रहा है। व्यापारियों से भी देश को कोई लाभ नहीं। भारत वर्ष में शिल्पियों का सम्मान नहीं, कच्चा–माल बाहर भेजते हैं, तैयार माल मंगाते हैं। इस प्रकार व्यापार का मक्खन विदेशी व्यापारी खाते हैं केवल छाछ हमारे व्यापारियों के पास रहती है।

अब आप विचार कर रहे होंगे कि यह क्या समस्या है जिसे देश के लोग उत्तम कार्य समझकर कर रहे हैं, वही देश के लिए हानिकारक है। इसका उत्तर है कि जिस मनुष्य की आंखों में दोष आ जाए यदि वह मनुष्य अपनी निर्बल आंखों की औषधि कराने की बजाए उन्हें निकलवा दे और मृग की सुन्दर आंखे लगवा ले तो देखने में तो वे अति सुन्दर लगेंगी, लेकिन उसकी देखने की शक्ति पूर्णतया जाती रहेगी। अब यदि उसे देखकर व उसके नेत्रों को सुन्दर जानकर कोई उसे अपना पथ प्रदर्शक बना ले तो वह स्वयं तो गड्ढे में गिरेगा ही दूसरे को भी गिराएगा।

ठीक यही स्थिति इस मेरे देश की है जब इसके वास्तविक नेत्र अर्थात् इसकी सभ्यता–संस्कृति और विद्या इसके आलस्य व प्रमाद से निर्बल हो गई तो उसने उसे कुरुप और व्यर्थ समझकर पाश्चात्य भाषा और पाश्चात्य संस्कृति रूपी मृग की आंखे लगा ली, जिससे इसका सौन्दर्य और आकर्षण तो बढ़ गया जो बाहर से देखने पर तो लाभकारी लगता है लेकिन वास्तव में भारतवर्ष को अवनति के गड्ढे में गिरा दिया। क्योंकि देश के पथ–प्रदर्शक भी वही अंग्रेजी पढ़े लिखे व्यक्ति हैं, जिन्होंने मृग की आंखें लगा ली हैं, जो इस देश के रोग से नितान्त अनभिज्ञ हैं। जिन्हें पता ही नहीं है कि इस देश की उन्नति उसकी अपनी विद्या व धर्म पर निर्भर है। धर्म न जानने के कारण इस देश के लोगों में न शारीरिक बल है और न आत्मिक बल है। शस्त्रविद्या का ज्ञान नहीं रहा। ऐसी निर्बलता आ गई है कि प्राण रक्षा भी दुष्कर है। चोर डाकू तो शस्त्र धारण करते है, सुसभ्य प्रजा शस्त्र विहिन है। कैसा भयंकर दृश्य है कि पशुओं को तो मारने की शक्ति दी जाए और मनुष्य से प्राण रक्षा के भी शस्त्र छीन लिए जाएं। बल का दूसरा साधन है एकता। वह भी नहीं रही क्योंकि मैकाले की शिक्षा ने प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में 'मेरे जैसा कोई नहीं' का विचार इस कदर भर दिया कि व्यक्ति अपने से उत्तम व श्रेष्ठ व्यक्ति की ठीक बात को भी नहीं सुनना चाहता।

अब हम इस समय जिस वस्तु के बारे में खोज करेंगे तो उसे निर्बल ही पायेगें, परन्तु अब यह विचार करेंगे कि क्या यह निर्बलता स्वाभाविक है? क्या भारत में कभी इन वस्तुओं का अस्तित्व नहीं था। यदि वास्तव में देश इन गुणों से रहित था तो मानना पड़ेगा कि भारतवर्ष अभी बालक है। तो उसकी उन्नति के वे साधन होने चाहिएं जो बालक को बल बढ़ाने के लिए चाहिएं। यदि यह बात सिद्ध हो जाए के भारतवर्ष में ये गुण थे जो किसी कारणवश नहीं रहे तो हमें मानना पड़ेगा कि निर्बलता रोग के कारण है, उसकी चिकित्सा करनी पड़ेगी। इस बात की पड़ताल के लिए जब भारत के इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि भारतवर्ष में विद्या थी और इसका प्रमाण हमारे सामने षड्दर्शन, उपनिषद, उपवेद और वेद हैं जिन्हें देखकर संसार चकित है कि इनके रचयिता विद्वान् थे। इन सब बातों को देखने से पता चलता है कि विद्या के विषय में भारत की यह दशा न थी जो देखने में आती है। आज समस्त संसार के विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि भारतवर्ष विद्या की खान था।

अब धर्म की चर्चा करते हैं। देश में धर्म की यह दशा न थी जो अब देखने में आती है। इससे बढ़कर धार्मिक भाव था जो महाराजा रामचन्द्र जी का जीवन स्पष्टतया बता देता है कि किस प्रकार उन्होंने पिता की आज्ञा पर तुरन्त राज्य छोड़ दिया। लक्ष्मण जी ने भातृप्रेम में घर–बार, माता–पिता व स्त्री आदि सुख छोड़कर वन–वन घूमना स्वीकार किया। जब सीताजी के पतिव्रत धर्म का विचार आता है तो यह निश्चय हो जाता है कि देश में धर्म था।

अब खोज करते हैं कि भारत में शिल्प था या नहीं, तो उस समय महाराज युधिष्टर के महल का ध्यान आता है कि जहां इस प्रकार की कारीगरी थी–जहां पानी था वहां सूखा और जहां सूखा है वहां पानी प्रतीत होता था।

अब हम विचार करते हैं कि भारत में देशवासियों में देश उन्नति का भाव था कि नहीं। जिस समय महमूद ने भारत पर आक्रमण किया उस समय यहां की स्त्रियों ने अपने आभूषण गला–गला कर लाहौर के राजा जयपाल की सहायता के लिए भेजे थे। क्या इससे बढ़कर भी देशभक्ति हो सकती है। जिस समय सिन्ध के राजा दाहर पर मुसलमानों ने आक्रमण किया और राजा दाहर युद्ध में मारे गए, उस समय राजपूतों के लगभग सवा सौ पुत्र थे जिनकी आयु तेरह वर्ष की थी तो उन बालकों से कहा गया कि तुम यहां से भागकर अपने प्राण बचा लो तो उन्होंने कहा हम रण में लड़कर मरेंगे जैसाकि क्षत्रियों का धर्म है। यदि बल का पता लगाना हो तो भीम, अर्जुन, रामचन्द्रजी के इतिहास से भली प्रकार विदित है–बल भी न्यून नहीं था।

इन सम्पूर्ण बातों कि खोज से भली प्रकार विदित हो जाता है जिन बातों की आज न्यूनता है वे बातें प्रचीन समय में बहुत अधिक थी। भारत में सब प्रकार कि शक्ति विद्यमान थी। परन्तु कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिनके कारण क्रमशः न्यूनता हो प्राप्त हो गए। इससे ज्ञात हो गया है कि देश बालक नहीं रोगी है। इसलिए इसकी वही चिकित्सा करनी चाहिए जो कि एक रोगी की होती है अर्थात् पहले इसकी अवनति

शेष पृष्ठ ५ पर

ऋषि दयानन्द-हमारे प्रहरी

-संजय आर्य, कतलूपुर, सोनीपत

वेद में जो वर्ण व्यवस्था बताई गई है उसका हम सही अर्थ ग्रहण नहीं कर पाए। कहा गया-जो ब्राह्मण है वही वेद पढ़ेगा। ऋषि दयानन्द ने उसको सही किया और कहा-जो वेद पढ़ लेगा वही ब्राह्मण कहलाएगा। परिभाषा को नया रूप दिया और एक पूरी वर्ण व्यवस्था को योग्यता पर आधारित कर दिया। मैं पूछता हूं कि जब मैडिकल की परीक्षा पास करने पर डॉक्टर कहलाता है, इंजिनियरिंग कर लेता है वह इंजिनियर कहलाता है, विद्या प्राप्त करके आध्यापक कहलाता है तो फिर वेद पढ़ने पर ही ब्राह्मण क्यों न कहलाएगा। जब तक ये अज्ञानता की बाधाएं दूर न होंगी, हमारा दृष्टिकोण नहीं बदलेगा, तब तक आप ऋषि दयानन्द को नहीं समझ पाओगे। ध्यान रखना डॉक्टर के बिना बिमारी का कोई इलाज नहीं है। बीमार को यदि आप सोने की डिब्बी में मिट्टी दोगे तो बीमार ठीक नहीं होगा, बीमार को तो दवाई ही देनी पड़ती है। ऋषि को समझोगे तो रोग ठीक होगा अन्यथा नहीं। तो आप कमर कसिए, संकल्प लीजिए, अपने पुरुषार्थ को सफल कीजिए अन्यथा कुछ हाथ न लगेगा।

मैं आज की स्थिति की बात कर रहा हूँ। मैं उस समय की बात नहीं कर रहा हूँ जब महाराज स्वामी को उदयपुर नरेश ने एकलिंग नाथ की गद्दी सौंपनी चाही थी। तब महाराज ने कहा था कि तुम्हारी इस भूमि से तो मैं एक कदम भर कर निकल जाऊँगा, लेकिन जिसके आदेश से मैं कार्य कर रहा हूँ उसके साम्राज्य से तो उम्र भर दौड़ता रहूं तब भी बाहर नहीं निकल सकता। राजा को स्वामी जी से क्षमा मांगनी पड़ी, कि वह तो परीक्षा ले रहे थे। तो मैं बात कर रहा था आज की-आज भी यदि हमारा कोई रक्षक है, आज भी कोई हमारा उद्धारक है, आज भी सिवाए ऋषि दयानन्द के अलावा हमारा कोई पहरेदार नहीं है। आज जाति-पाति के नाम पर देश को बांटा जा रहा है, आज अनैतिकता, भ्रष्टाचार देश में व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुँच गया है, शासक ही शोषक बन गए हैं। राष्ट्र-भक्त अन्याय सहने को विवश हैं, शिक्षा में देश की संस्कृति का चिन्ह नहीं बचा है। बचे तब, जब देवभाषा संस्कृत को लागू करवाने के लिए भी आन्दोलन करना पड़ता है। वह संस्कृत भाषा, जो संसार की सबसे प्राचीन भाषा है, जो सबसे वैज्ञानिक भाषा है। आज विज्ञान के युग में सबसे वैज्ञानिक भाषा की यह दुर्गति। उसी को पढ़कर ऋषि जान पाए धर्म का स्वरूप, जो उन्होंने बताया बम्बई के एक कान्फैंस हॉल में। उनसे पूछा गया आप ईसायत को धर्म नहीं मानते, इस्लाम को धर्म नहीं मानते, वर्तमान की हिन्दू परम्पराओं को धर्म नहीं मानते तो फिर धर्म की परिभाषा क्या है? ऋषि ने धर्म को परिभाषित किया जो स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। ऋषि ने कहा-सुनों! जो सत्यानुकूल, न्यायानुकूल, वेदानुकूल पक्षपात रहित आचरण है वही धर्म है, इसके सिवाय संसार में कोई धर्म नहीं है। इससे अच्छी धर्म की क्या कोई और परिभाषा हो सकती है। क्या यह हिन्दू का धर्म है? क्या यह ईसाई का धर्म है? क्या यह इस्लाम का धर्म है? क्या यह किसी एक देश, एक जाति, एक समूह का धर्म है? नहीं, यह सारे संसार का धर्म है। ऋषि दयानन्द अकेले भारत के नहीं हैं, ऋषि दयानन्द अकेले आर्यों के नहीं हैं। ऋषि दयानन्द की व्याख्या संसार की कसौटी पर खरी है। ऋषि दयानन्द मानव-मात्र का है, सारे संसार का है।

आप ऋषि के संघर्ष को क्यों भूल गए, उस ध्वजा को क्यों भूल गए जो ऋषि ने तुम्हारे हाथों में सौंपी थी। उस प्रतिज्ञा को क्यों भूल गए जो ऋषि ने अजमेर में अन्तिम समय करवाई थी। ऋषि दयानन्द के पीछे आओ, जब तक ऋषि के पीछे रहेंगे ओ३म् की ध्वजा को कोई झुका नहीं सकता। यदि ऋषि को टेक-ओवर करने की कोशिश करेंगे तो पिछड़ जाऐंगे। ऋषि दयान्द को पीछे छोड़ने की आवश्यकता नहीं उनके पीछे चलने की आवश्कता है। ऋषि प्रहरी हैं आर्यवंशियों के, आर्यवंशियों के गौरव के। आर्यवंशियों पर होने वाले हर आक्रमण को ऋषि दयानन्द सह लेंगे, हम केवल उनके पीछे रहें। ऋषि दयानन्द को जानकर देखो, उसके अन्दर झांककर देखो, राष्ट्र की सारी पीड़ाओं का समाधान मिल जाएगा। लेकिन हम तो बिना औषधि के ठीक होना चाहते हैं, बिना स्कूल भेजे बच्चे को पढ़ाना चाहतें हैं, बिना मार्गदर्शक के मंजिल पर पहुंचना चाहते हैं। ऋषि दयानन्द वैद्य हैं, मार्गदर्शक हैं, हमारे आचार्य हैं। उनका निर्देशन, उनका सन्देश, उनका उपदेश जब भी हम अपनाने लग जाऐंगे, राष्ट्र की उन्नति प्रारम्भ हो जाएगी। आओ, प्रतिज्ञा करें कि हम ऋषि दयानन्द के निर्देशन में चलेंगे।

पृष्ठ 4 का शेष

के कारणों को जानकर उनका निवारण किया जाए और जब रोग दूर हो जाए तब पुष्टिकारक पदार्थ देकर उसे बलशाली बनाया जाए। आजकल जो भारतवासी, इंग्लैंड और अमेरिका की उन्नति को देखकर उसी के अनुसार भारतवर्ष की उन्नति का विचार करते हैं वे पूर्णतया भ्रम में है क्योंकि इंग्लैण्ड और अमेरिका की उन्नति बालक की उन्नति की तरह नवीन उन्नति है। अत: जिस पदार्थ से वे बलवान हो गए उससे भारत जैसे रोगी देश की उन्नति असम्भव है। इंग्लैण्ड और अमेरिका तलहटी से ऊपर चढ़े हैं अत: उन्हें आगे बढ़कर काम करना उचित है। जो मनुष्य इंग्लैण्ड, अमेरिका की भांति भारत की उन्नति करना चाहता है वे बहुत भारी भूल में हैं। उनकी भ्रान्ति से भारत को जो हानि हुई है उसकी कोई सीमा नहीं है। अत: देशहितैषियों को यह उचित है कि मस्तिष्क से अभिमान को त्यागकर विचार करें और भारत की बीमारियों के कारणों को दूर करके भारत की उन्नति करें। इसका एक ही उपाय है कि भारत अपनी वेद-विद्या व उसकी संस्कृति को पुन: अपना ले, तभी उन्नति सम्भव है।

गांव बवानिया में आर्य सम्मलेन

गांव बवानिया (महेन्द्रगढ़) में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के तत्वाधान में आर्य समाज बवानिया द्वारा शहीदी दिवस व आर्य सम्मेलन 23 मार्च को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के संयोजक आर्य राजेन्द्र जी रहे, कार्यक्रम यज्ञ से प्रारम्भ हुआ व सैकड़ों लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। मुख्य वक्ता आचार्य वर्चस्पति, हिसार व आचार्या कल्पना आर्या, बिजनौर रहीं। इस अवसर पर विद्वानों द्वारा आर्य निर्माण के द्वारा समाज के उत्थान व समाज में फैली बुराईयों का निराकरण संभव है-ऐसा समझाया गया। कार्यक्रम से आर्य समाज के प्रति क्षेत्र के लोगों में जागरूकता उत्पन्न हुई।

आर्य समाज धौलड़ी (मेरठ) में कार्यक्रम

उपरोक्त आर्य समाज में 23 मार्च 2014 को बलिदान दिवस मनाया गया, जो इस आर्य समाज के लिए एक इतिहासिक शुरूआत रही। आर्य समाज धौलड़ी क्षेत्र में निरन्तर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आचार्य डॉ. विरेन्द्र आर्यव्रत (अध्यक्ष, राष्ट्रीय आर्यराज सभा) थे। कार्यक्रम के अध्यक्षता आर्य मलखान जी (अध्यक्ष, प्रान्तीय आर्यराज सभा, उत्तर-प्रदेश) रहे, मंच संचालन आर्य अंकित जी ने किया। भजनोपदेश आर्य रतन सिंह जी का रहा। आर्य सुनिल शास्त्री, पण्डित गोपाल जी, आर्य नारायण जी, आर्य कुलभूषण जी, आर्य विनोद जी, आर्य ज्ञानबोध जी व आर्या ममता जी विशेष रूप से आंमत्रित थे। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य डॉ. विरेन्द्र आर्यव्रत जी ने आह्वान किया कि जितनी अधिक आर्यों की संख्या बढ़ेगी, जितना आर्यों का संगठन बढ़ेगा, उतना ही राष्ट्र आर्य राज की ओर बढ़ेगा। कार्यक्रम में आर्य कालूराम, आर्य सत्यपाल, आर्य प्रमोद, आर्य पवन, आर्य मुकेश, आर्य राकेश, आर्य राजन, आर्य रामकुमार व आर्य मनेन्द्र का विशेष सहयोग रहा।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

लेखमाला–12

डेरावाद : सैद्धान्तिक विश्लेषण

-दयानन्द आर्य, बिठमढ़ा, हिसार

प्रश्न :85 मानव जाति के पतन को रोकने के लिए सतगुरु क्यों नहीं कुछ करते? इसका उत्तर यह है कि सतगुरु प्रकृति की व्यवस्था में कोई दखल नहीं देते। पृ. 507

टिप्पणी : क्या पतन प्रकृति की व्यवस्था है? यही हाँ, तो दु:ख, मुसीबतें भी प्रकृति की व्यवस्था हुई। जब आप ने 'मुसीबतों से छुटकारा' (मोक्षादि) का काम अपने ऊपर ले लिया तो यह भी तो प्रकृति की व्यवस्था में दखल हुआ, कि नहीं?.. ..अत: यह बहाना आपने अपनी अयोग्यता को छुपाने मात्र को ही किया है।

और जो प्रकृति की व्यवस्था में दखल नहीं, तो आप क्यों झूठा दावा करते (प्र.22, पृ.54) कि सतगुरु के वश में कुदरत की मशीन। वे इन शक्तियों के मालिक हैं, इत्यादि। क्या स्वयं मालिक द्वारा मशीन का प्रयोग या उपयोग प्रकृति का उल्लंघन है? अत: यह निश्चित है कि आपने यहाँ या वहाँ (प्र. 22) एक जगह झूठ अवश्य बोला है।

अरे! पतन प्रकृति नहीं, यह तो प्रकृति में विकृति है। और जो पतन प्रकृति है तो इसमें हमें पाप भी न होना चाहिए, क्योंकि जब परमात्मा ने प्रकृति से हमें बनाया ही ऐसा है तो वह हमसे पुण्य-कर्मों की अपेक्षा कैसे और क्यों करेगा? वह परम न्यायकारी , पतन या पाप की व्यवस्था करके, पुण्य-कर्म कैसे चाह सकता? इससे तो खुद परमात्मा पापी हो जाएगा। और ऐसा कदापि नहीं हो सकता। अरे! पापी तो ये झूठे सिद्धान्त देने वाले हुए जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए जाने-अनजाने स्वयं परम-पवित्र परमात्मा पर भी लाँछन लगाने से बाज नहीं आते। अरे! परमपिता क्या हमसे नहीं चाहते होंगे कि हम पूर्वाग्रह, अन्ध-श्रद्धा छोड़कर सत्य-असत्य का निर्णय करें और केवल सत्य को ही ग्रहण करें? बन्धुओ! अब निर्णय आप को करना है। उपलब्ध विवेक का अधिकतम प्रयोग करते हुए, समस्त पूर्वाग्रहों को त्यागकर, सत्य के सच्चे जिज्ञासु होकर, केवल सत्य को ही ग्रहण करें और सब प्रकार के झूठ, अविद्या को छोड़ दें। बन्धुओ! वेद के ज्ञान व सिद्धान्तों के साथ अन्य मार्ग या सिद्धान्त ठहर नहीं पाता है। परन्तु इसके लिए पहले हमें वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। कहीं ऐसा न हो कि वैदिक ज्ञान-सिद्धान्तों के नाम पर हमें कुछ का कुछ परोसा जा रहा हो और फिर हम वैदिक ज्ञान को भी अवैज्ञानिक, अतार्किक और सृष्टिक्रम के विरुद्ध मानते रहें।

अब प्रश्न यह है कि हम सच्चा, प्रामाणिक वेद-ज्ञान कहाँ से प्राप्त करें, कि जिससे हमें भ्रमाया या ठगा न जा सके। बन्धुओ! हमारी पीढ़ी एक तरह से सौभाग्यवान है कि हमें ऋषि दयानन्द जी ने न केवल वेदों का सत्यार्थ-प्रकाश उपलब्ध कराया, बल्कि सच्चा वेद-ज्ञान आर्य-भाषा (हिन्दी) में उपलब्ध कर-करा हमारा मार्ग और सुगम बना दिया। हम न केवल उनकी रचनाओं "सत्यार्थ-प्रकाश" आदि का सहयोग ले सकते हैं, बल्कि वैदिक सिद्धान्तों के व्यावहारिक-प्रारम्भिक एवं अति-उपयोगी ज्ञान के लिए श्रेष्ठ-वैदिक-आचार्यों के द्वारा प्रेरित एवं संचालित "दो-दिवसीय" आर्य-आर्या प्रशिक्षण सत्रों की सहज, ग्राह्य, श्रेष्ठ शैली में उपलब्ध करवाए जा रहे वैदिक-ज्ञान-कोष का भी लाभ ले सकते हैं। वैदिक-सिद्धान्तों की इससे उत्तम, प्रामाणिक, सहज व सरल उपलब्धता शायद ही कहीं और हो।

सतगुरुवाद-मार्ग व सिद्धान्तों की असारता, अपूर्णता व तर्कहीनता आप देख-परख चुके हैं। अब केवल अठारह बीस घण्टे (दो दिन) में वैदिक सिद्धान्तों की "सम्पूर्णता, वैज्ञानिकता" तर्क परकता, सृष्टि क्रमानुकूलता को आप उपरोक्त सत्रों में सरलता से जाँच और जान सकते हैं। आप पाओगे कि केवल और केवल वैदिक मार्ग ही सार्वदेशिक, सार्वकालिक व सार्वजनिन सत्य-सिद्धान्त युक्त है... क्यों? क्योंकि यह ईश्वरीय मार्ग है, ईश्वरीय ज्ञान है।

परमपिता परमेश्वर हम सब आर्य-वंशजों को सद्बुद्धि दे!

समाप्त

पृष्ठ ३ का शेष

लिए वे अनेक स्थानों पर गए। इसी दौरान उन्हें अपने पिता की बिमारी से भी जुझना पड़ा और इसके कारण समाज के काम में बाधा उत्पन्न होने पर उनका मन बड़ा खिन्न होता था। लाला लाजपतराय को अपने एक पत्र लिखते हैं "पिता के प्रति कर्त्तव्य और देश के प्रति कर्त्तव्य के बीच झगड़ा हो गया है। मन किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहा है। इन सब व्यस्तताओं और सामाजिक कोलाहल के होते हुए भी गुरुदत्त की आत्मा ऊँची और ऊँची होती जा रही थी। वे वैदिक धर्म की गहरी सचाईयों को अपने अन्दर ग्रहण कर रहे थे। आध्यात्मिक व बौद्धिक दोनों ही क्षेत्रों में वे निरन्तर आगे बढ़ रहे थे। अनेक ग्रन्थों का ज्ञान अर्जित कर चुके थे। व्याकरण पढ़ाने के लिए कक्षाएं लगाते थे। धारा प्रवाह संस्कृत बोलना सीख गए थे। 1883 का वर्ष तो उनके लिए विशेष रहा। मोनियर विलियम्स की "इण्डियन विजडम" पर दोषालोचनात्मक व्याख्यान दिए, स्वर विद्या का अध्ययन किया, वेदमन्त्रों के उच्चारण करने की शुद्ध रीति जारी की। अपने जीवन के छोटे से काल में उनका इतना विस्तृत ज्ञान सम्पादन कर लेना सदा एक आश्चर्य और प्रशंसा का विषय बना रहेगा। उनकी वक्तृता की झलक देखने के लिए उनके एक व्याख्यान के कुछ अंश उद्धृत हैं "आधुनिक विज्ञान चाहे उसमें कितने ही गुण क्यों न हों, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रकाश नहीं डालता। वह मनुष्य के आत्मा में आन्दोलन पैदा करने वाले सबसे महान और कठिन प्रश्न-मनुष्य जाति के आदिमूल और इसके अन्तिम भाग्य के हल करने में कुछ भी सहायता नहीं करता।. ....यह समस्या वेदों की सहायता के बिना हल नहीं की जा सकती। वही केवल इस अद्भुत रहस्य का उद्घाटन कर सकते हैं और उन्हीं की और वैज्ञानिक लोगों को अन्त में आना पड़ेगा।....लोक परलोक दोनों का ही सुख वेदों के अध्ययन का फल है।...सच्चाई का वही नित्य सूर्य पुन: प्रकट हो गया है। इसमें मूढ़ विश्वास के बादलों को सर्वथा छिन्न-भिन्न कर दिया है। संसार पर छाया हुआ अशुभ अन्धकार टुट गया है और भास्कर पहले के से तेज के साथ पुन: चमक रहा है। यह सुखद अवस्था स्वामी दयानन्द के परिश्रम का ही फल है।.....**जिन लोगों की आत्माएं मूढ़ विश्वास के अन्धकार से बाहर निकल चुकी हैं उन सब का यह परम कर्त्तव्य है कि वे संशयात्मक लोगों के संशय की और धर्मान्ध तथा दुराग्रही लोगों की धर्मान्धता तथा दुराग्रह की चिकित्सा करें"।**

स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन ने उनके मन पर अद्भुत प्रभाव पैदा किया था। धीरे-धीरे उनके विचार बड़े ही शान्त और संयत हो गये थे, उनका मन स्थूल बातों को छोड़कर सूक्ष्म बातों की ओर जाता था। आत्मिक उन्नति ही उनके प्रयत्नों का मुख्य उद्देश्य बन गई थी। परिश्रम दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। शरीर की क्षमताएं कम होती चली गई। रोग ने घेर लिया। लेकिन वो फिर भी और अधिक कार्य में लगे रहे जैसे कि अपनी मृत्यु से पहले कार्य को समाप्त कर देने के लिए प्रयत्नशील हों, हड्डियों का केवल ढ़ांचा मात्र रहने पर भी सार्वजनिक हित के वाद-प्रतिवाद में निरन्तर भाग लेते थे। शारीरिक कष्ट की परवाह न करना उनका चिराभ्यस्त दोष था। वे ऐसा अदूरदर्शिता या ऐसे कामों के परिणाम से अनभिज्ञ होने के कारण नहीं अपितु भीतर से एक प्रबल आवेग के कारण करते थे। उनकी शक्ति दिन प्रतिदिन घट रही थी, वे क्षीण और क्षीण होते जा रहे थे। चिकित्सा भी करवाई गई। परन्तु रोग निरन्तर बढ़ता चला गया। कष्ट के समय में भी वे शान्त थे। जैसे परमपिता से मिलने को उत्सुक हों।

19 मार्च 1890, प्रात:काल वे अपने शरीर को त्याग गए। रोग से मुक्त हो गये, लेकिन आर्य समाज के गगनमण्डल में एक अभेद्य अंधकार छोड़ गए। एक मनुष्य, एक असाधारण मनुष्य, एक अलौकिक मनुष्य, संस्कृत विद्या का एक सच्चा और अद्वितीय पण्डित-प्राचीन ऋषियों का एक सच्चा वंशज-इस संसार से उठ गया। उसका लक्ष्य बहुत उच्च था, वह गौतम, पातंजलि, व्यास, याज्ञवल्क्य और स्वामी दयानन्द को अपना आदर्श समझता था। आर्यों, 26 वर्ष से भी कम आयु में हम ऐसे प्रतिभावान युवक को खो बैठे। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी रोज-रोज पैदा नहीं होते। हमें सावधानी से चलने की आवश्यकता है। वे हमें बहुत कुछ दे गए लेकिन उनकी असमय मृत्यु के कारण हम बहुत कुछ प्राप्त करने से वंचित रह गए। हमें वर्तमान में भी अपने विद्वान्, पुरुषार्थी, प्रतिभावान, मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोतों को रक्षित करके आगे बढ़ना होगा अन्यथा बहुत कुछ प्राप्त करने से हम फिर वंचित रह जाएंगे।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

इस सत्र में मैं सम्मिलित होकर कुछ अनसुलझी बातें जो आजतक ऊहापोह जैसी थी वह बातें साफ हो गई। जैसे-राष्ट्र, राष्ट्रीयता, नागरिक और एक सच्चे नागरिक का कर्त्तव्य। राष्ट्र भक्त कौन और राष्ट्रद्रोही कौन? ये बातें साफ-साफ समझ में आई। सचमुच हिन्दु होकर इस पावन राष्ट्र को बचाया नहीं जा सकता। राष्ट्र को आर्य बनकर ही बचाया जा सकता है। एक बात जो जानकारी मिली वह यह कि नालायक संतान का इस मातृ-भूमि और मातृ-भूमि की सम्पदा पर कोई अधिकार नहीं हो सकता। क्योंकि वे अपने पूर्वजों का सम्मान नहीं करते, उनकी मान्यताऐं भिन्न हैं, उनकी पूजा की पद्धति अलग है, उनका मजहब अलग है, उनकी संस्कृति अलग है, अब तक मैं अपने को राष्ट्र-भक्त मानता था और अब मैं सच्चा राष्ट्र-भक्त अपने को कह सकता हूँ। यह शिविार प्रत्येक युवाओं और युवतियों को उपलब्ध होना चाहिए।

मैं तन-मन-धन और समय से सहयोग कर सकता हूँ।

अरविन्द देव आर्य, आयु-50 वर्ष, योग्यता- ईन्टर
कार्य- पिरोहित, कुआठ, जयनगर, मधुबनी, बिहार

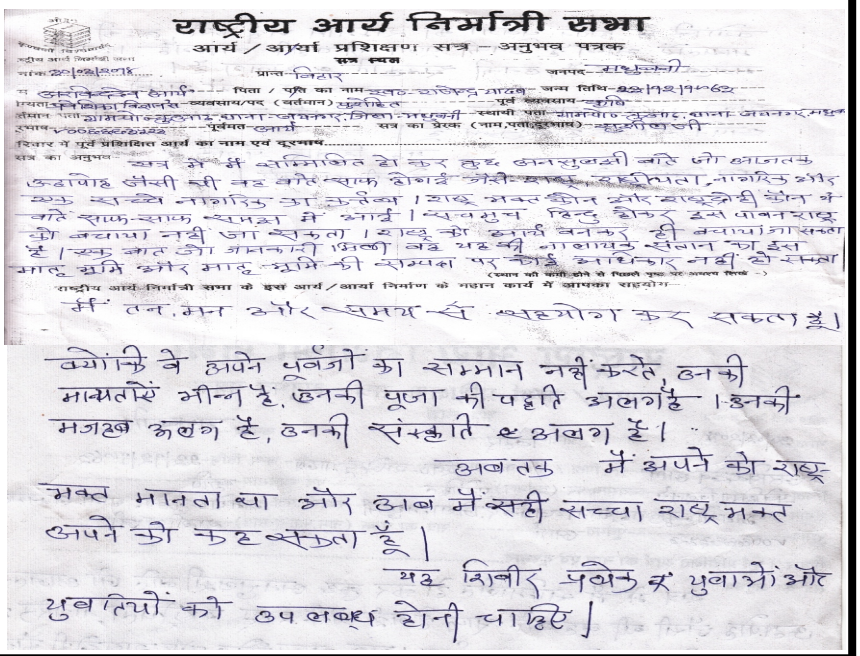

दिनांक 28.03.2014 से 30.03.2014 ई० तक का अनुभव पूर्ण वैदिक ज्ञान के आधार पर सत्य-असत्य का निर्णय करना सरलता से प्राप्त हुआ। धर्म-अधर्म को पहचान कर निर्णय लिया कि वैदिक धर्म के अनुसार चरित्र निर्माण, मानव का निर्माण करना धार्मिक और वैदिक धर्म के अनुसार चलना धर्म और धार्मिक करना हुआ। वैदिक धर्म के अनुकूल नहीं चलना अधर्म तथा अधार्मिक कार्य करना कहलायेगा। वैदिक जीवन-यापन करना श्रेष्ठतम् है। राष्ट्र का बहुत ज्ञान प्राप्त किया। राष्ट्र के प्रति श्रद्धावान और निष्ठावान बनने का संकल्प लिया। आर्य बन के आर्यावर्त्त की रक्षा और प्रतिष्ठा के साथ मातृ-भूमि के गौरव को बढ़ायेंगे।

पण्डित कृष्ण देव आर्य, आयु-68 वर्ष, योग्यता-स्नातक
पद- अध्यापक, दुलीपट्टी जयनगर, मधुबनी, बिहार

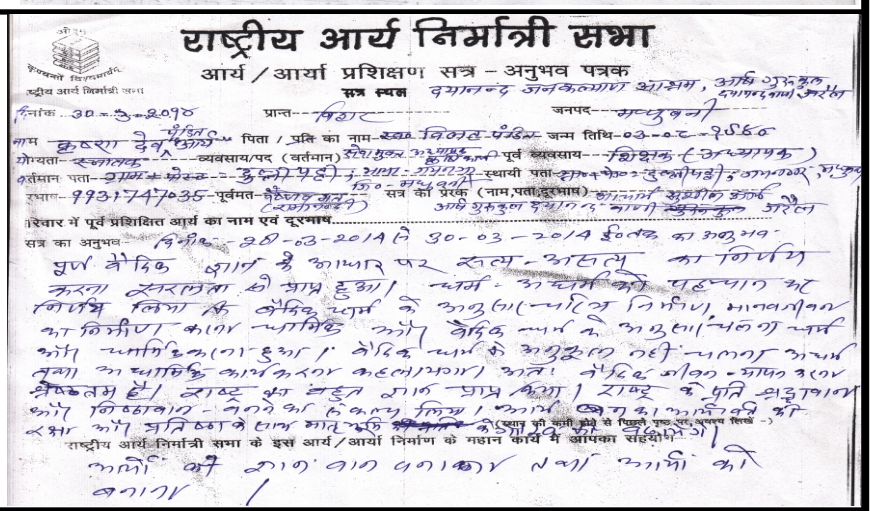

यह सत्र करके मुझे बहुत खुशी हुई और अष्टांग धारा जीवन में उतार कर स्वस्थ और मानसिक रूप से तैयार होंगे। स्वस्थ जीवन और मानसिक शांति का अनुभव हुआ, और भी वैचारिक रूप से जानकारी मिली। और जीवन में आच्छा बुरा सोचने की राह मिली। और जीवन में नशा और व्यसन के बारे में बहुत ही जानकारी मिली और इससे क्या गैर फायदा है वो प्रवचन के माध्यम से जानने को मिला। बहुत ही प्यार मिला, आनन्द मिला और जीवन की सच्ची राह मिली। नई सोच मिली और जीवन की नई सोच समाज को मिली। जय आर्य.....

धनश्याम भाई, आयु-48 वर्ष, योग्यता-10 वीं
पद- व्यापार, 11, शान्तिदीप सोसाईटी,नाना बाजार विद्यानगर गुजरात

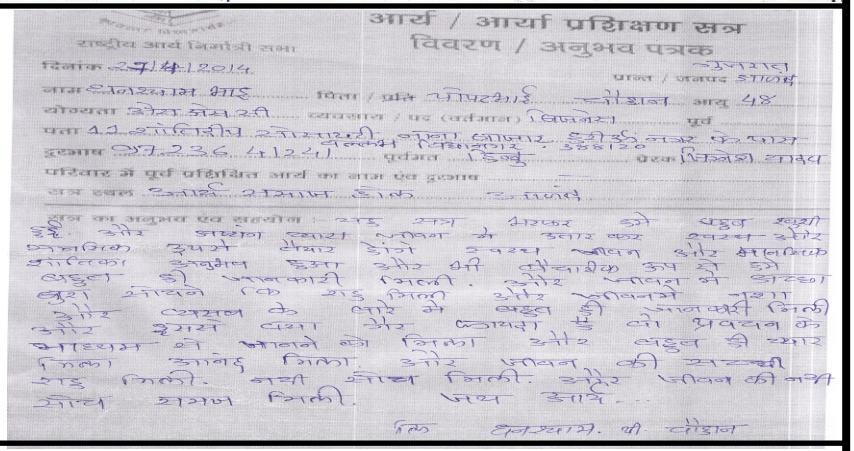

'परम-धर्म'

– श्री मोहनलाल शास्त्री

॥ वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है॥

वेद को श्रुति कहा जाता है, क्योंकि वेदमन्त्र सुनकर ही स्मरण किए जाते हैं, बिना आचार्य के उद्धात्त-अनुदात्त-स्वरित स्वरों का ज्ञान होना सम्भव ही नहीं, इसका शिक्षण मात्र पुस्तकों से पढ़कर नहीं हो सकता।

वेद शब्दविद्या है, शब्द को अक्षर भी कहा है।

तमक्षरं ब्रह्म परम पवित्रं गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्रा।
स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव, सम्यक प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति॥

(सूत्रात्मक-पाणिनीय शिक्षा)

विद्वान् लोग, उस आकाश वायु प्रतिपादित, अविनाशी विद्या, सुशिक्षा सहित बुद्धि में स्थित, अत्युत्तम शुद्ध शब्द राशि की अच्छी प्रकार प्राप्ति की कामना करते हैं, और वह अच्छी प्रकार प्रयोग किया हुआ शब्द शरीर, मन, आत्मा और सम्बन्धियों के लिए इस संसार के सब सुख से मनुष्य को सम्बद्ध कर देता है। **(एकः शब्दः सम्यक् प्रयोगे सुष्ठु ज्ञाते स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति।)**

ऐसी महितामयी शब्द-विद्या वेद है, इसीलिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने वेद पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म कहा है, सब, कहने का तात्पर्य आचरण युक्त आर्य तथा परम्परागत नाम- मात्र के माने-जाने वाले आर्यों से भी है, फिर परमधर्म अर्थात् आत्यन्तिक कर्त्तव्य है।

इसलिए आर्यों को इस धर्म का पालन आवश्यक है, किन्तु चिर अतीत से इस देशवासियों की आदत ही बन गई है, सिद्धान्त को जानना, समीक्षा करना परन्तु कार्य रूप में परिणित न कर सकना।

अतः अब आर्यों को इस आदत को छोड़कर परमधर्म को पालन करने का सत्प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं-जब भी कोई सम्मेलन, उत्सव, महापुरुषों की जयन्ति या निर्वाण दिवस (बलिदान दिवस) के समारोह हों तो उनमें वेद-पाठ का कम से कम 15-20 मिनट का समय निर्धारित किया जाय। बहुत से कार्यक्रमों को देखने-सुनने से ज्ञात हुआ कि गुरुकुल के छात्र अधिकतर कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं, इसलिए छात्रों से सस्वर वेद-पाठ कराया जा सकता है। दो-दो मन्त्र सभी वेदों के उनके भावार्थ सहित पाठ हों तो वक्ता-श्रोता सबका कल्याण सम्भव है।

इस प्रक्रिया से छात्रों को मन्त्रों के भावार्थ व्यक्त करने का अवसर मिलेगा, सभा में बोलने का अभ्यास होगा तथा गुरुकुल का परिचय भी जनसामान्य को होगा।

आर्य समाज का तीसरा नियम, कार्यरूप में परिणित होकर समाज के हित साधन का कारक बनेगा।

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

शहीदी दिवस समारोह, (23 मार्च 2014) आर्यसमाज, घौलड़ी, मेरठ

आर्य सम्मेनल गांव-बवानिया महेन्द्रगढ़ (23 मार्च 2014)

शहीदी दिवस समारोह, गांव-किनाना, जीन्द, (23 मार्च 2014) में आचार्य अशोक पाल जी व आर्य सुशील जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (26-27 अप्रैल) महेन्द्रगढ़ में आचार्य अशोक पाल जी व आर्य राजेन्द्र जी

॥ ओ३म् ॥

ऋषि दयानन्द की संघर्ष-यात्रा

जहां लाखों लोग अपनी मुक्ति का विश्वास लेकर, उफनती नदियों की तरह बढ़ रहे हों, अपना तन-मन-धन और जीवन भी चला जाय, तो भी धन्य हो जाएंगे, ऐसी दृढ़ मान्यता लेकर, तथाकथित श्रद्धा के हिलोरे लेकर उमड़ पड़े हों, और इस विश्वास मान्यता एवं श्रद्धा को दृढ़मूल करने हेतु जहां हजारों साधु, संन्यासी, अवधूत नागा बाबा तथा अपने-अपने सम्प्रदायों के शिरोमणि मठाधीश आसन-सिंहासन जमाये आगामी वर्षों के लिए अपार धन सम्पदा के सपने संजोये विशाल भूभाग पर अवस्थित हुए हों। ऐसे स्थान पर पहुँचकर भला इस तीव्र धारा को ही सीधा करने का महान प्रयास निर्भीक, परम साहसी ऋषि देव दयानन्द के जीवन को छोड़कर कहां मिल सकता है? और किसने कुम्भ में पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई होगी?

अर्थात् ऋषि दयानन्द जी का यह जीवनवृत्त प्रत्येक उस मानव के लिए पठनीय, मननीय और आचरणीय है, जो सत्य को पाना चाहता है, सत्यविद्या और सत्यस्वरूप परमपिता परमात्मा को पाना चाहता है। बहुत सारे जन हठ, दुराग्रह, एवं स्वार्थवश अपने द्वारा प्राप्त विद्या को ही पूर्ण मानकर उसी में रमे रहते हैं, और उससे अतिरिक्त कुछ भी देखने को तैयार नहीं होते, मैं साग्रह उनसे कहना चाहता हूँ, कि-एक बार आप ऋषि के इस संघर्षपूर्ण सत्यमय जीवन को देखिए तो सही, पढ़िए तो सही, आप कृत्कृत्य होंगे, अभीभूत होंगे, अवश्य ही निहाल हो जाएंगे।

-आचार्य हनुमत् प्रसाद

पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, विषय वस्तु अनावश्यक विस्तार से रहित व घटनाएं सत्यता के निकट बिना किसी बाह्य आडम्बर के रखी गई हैं। इसका लाभ यह रहेगा कि ऋषि दयानन्द को उनके वास्तविक स्वरूप में समझने में सहायता मिलेगी और सिद्धान्तों के व्यवहारिक पक्ष को हम सरलता से समझ सकेंगे। अनेक व्यक्ति ऋषि के जीवन को जानना चाहते हैं कि किस प्रकार ऋषि के द्वारा विपरीत परिस्थियां होते हुए भी सिद्धान्तों को न केवल जीवन में धारण किया अपितु अनेकों लोगों को धारण भी करवाया। ऋषि दयानन्द का यह जीवन-चरित् घर-घर, व्यक्ति-व्यक्ति के पास पहुँचे यही हमारी हमारा आकांक्षा है। इसलिए सभी आर्यों के लिए आवश्यक हो जाता है कि इस पुस्तक का स्वाध्याय एक बार अवश्य करें और अन्यों को भी इसके लिए प्रेरित करें। ऋषि दयानन्द की जीवनी पृष्ठ-११८, प्रकाशक-आर्य समाज, सैक्टर-23,24, रोहिणी, दिल्ली। सम्पर्क करें-9350945482, 9810485231

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।